. ई सौभग्य बनल रहय

. **********

– भीमनाथ झा

“”””””””””””””””””””””

नचिकेताजीसँ पहिल भेट कहिया भेल, से मन नहि पड़ैत अछि। मुदा, जहिया भेल हो, ताही दिनसँ हुनक विनम्रता चित्तमे सटि गेल। तकर बादे हुनक कविता, विद्वत्ता, आपकता आदिक परिज्ञान भेल। जहाँधरि मन पड़ैत अछि, 'कवयो वदन्ति'क पुस्तक-परिचय 1966-67 मे 'मिथिला मिहिर'मे छपल छलनि। तकर बादेसँ लिखित तँ कम, मुदा मौखिक चर्चाक केन्द्रमे ओ आबि गेल रहथि। एतबे वयसमे कोना एहन कविता लिखि लेलनि? किछु तँ बात जरूर छै। खासक' युवातूरमे से चर्चाक विषय बनि जाइ छलै। हम ता पोथी नहि देखने छलिऐ। 1973 मे 'मिथिला मिहिर' गेलापर, कलकत्ताक प्रसंग उठलापर नाटक आ कविता साहित्यक चर्चाक क्रममे हिनक नाम आब' लागल छलनि। विद्यापति पर्वक अवसरपर प्रति वर्ष प्रबोध बाबू आ अणिमाजी चेतना समिति, पटना पहुँचबे करथि। प्रबोध बाबूक अनायास हमरा प्रति अति स्नेहसँ हम संकुचित भ' जाइ। सेमिनार आ कविसम्मेलनमे हमर आलेख आ कविता सुनिक' अपन स्नेहिल उद्गार ओ प्रगट करबे करथि, संगहि ईहो कहब नहि बिसरथि जे अणिमाजी सेहो अहाँक प्रशंसा करै छली। तदुत्तर नचिकेताजीक चर्च सेहो करथि, जाहिमे अपन पुत्रपर गौरव आ स्नेहक भाव झलकि उठै छलनि। कोनो प्रसंगमे एक समय सम्पादकजीक एक टिप्पणीसँ ओ लोकनि आहत भेलो रहथि, ताहू समयमे हमरा प्रति स्नेहशीले रहला।

नचिकेताजी जखन मैथिली कविता पत्रिकाक सम्पादन करै छला, ताहि क्रममे हमरो कविता देबाक समाद पठौलनि कि पत्र लिखलनि– से मन नहि अछि। मुदा हम कविता द' नहि सकलियनि।

1983 मे साहित्य अकादेमीक परामर्शी मण्डलमे अणिमाजी रहथि। आचार्य सुमनजी हमरो राखि लेने रहथि। दिल्लीक मीटिंगमे अकादेमी आफिससँ अणिमाजीकेँ डेरा ल' जयबा लेल ई अबथिन, तखन किछु परस्पर वार्तालाप भ' जाइ छल। ओहिसँ पहिने एक रीसर्च प्रोजेक्टक क्रममे मैथिली आन्दोलनक प्रसंग किछु प्रश्नावली पठौने रहथि, तकर उत्तर हम पठा देने रहियनि, से पूरा टाइप्ड थिसिस हमरा देलनि। ओकर प्रकाशन अद्यावधि प्राय: नहि भ' सकलै अछि। से होयब हमरा जरूरी बुझि पड़ैत अछि।

साहित्य अकादेमीक साहित्यकार भ्रमण कार्यक्रमक अन्तर्गत हंसराजजी आ हम हैदराबाद गेल रही। ओहि कालावधिमे ई हैदराबाद युनिवर्सिटीमे प्रोफेसर रहथि। हमर माझिल जमाय (डा. संजीव कुमार चौधरी) ताहि बीच ओतहि भाषाविज्ञानमे रीसर्च करैत रहथि। हिनका पता लगलनि तँ हमरा लोकनिकेँ आमंत्रित क' डेरापर बजौलनि। विन्यस्त भोजन भेलै, बड़ीकाल गपसप चललै। जे पोथी छपनि, डाकसँ पठबा देबे करथि।

जखन ई सी.आइ.आइ.एल.मे डाइरेक्टर रहथि, तखन एक दिन फोनपर कहलनि जे अपन प्रयाससँ भुवनेश्वरमे पूर्वोत्तर भाषाभाषी लेल भाषाशिक्षण संस्थानमे मैथिली पढाइक प्रावधान सेहो केलिऐ अछि। से एक सुयोग्य व्यक्तिकेँ, जे ओत' जा क' पढ़बथिन, तनिक बायोडाटा पठाउ। हम पठा देलियनि आ हुनक बहाली भ' गेलनि। किछु मासक बाद फेर फोन कयलनि जे एक गोटाक आर नाम ओ बायोडाटा पठाउ। हुनको बहाल क' लेलथिन। हमरापर विश्वास करब साधारण बात नहि थिक आ से हुनक हमरा प्रति विशेष आस्था ओ स्नेह झलकबैत अछि। ओहि दुनू शिक्षकक सौजन्यसँ आइ अनेक मैथिल ओत' शिक्षणकार्य करै छथि आ अन्य भाषाभाषीकेँ मैथिलीक शिक्षा द' रहल छथिन।

हमरा प्रति हुनक प्रेम-स्नेह हमरा लेल मूल्यवान अछि। साहित्य अकादेमीमे गेला उत्तर अनेक काजक भार देबाक प्रस्ताव प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ ई हमरा करैत रहैत छथि, किन्तु आब शारीरिक आ मानसिक शैथिल्यक कारणे असमर्थता छोड़ि कोनो विकल्प हमरा लेल रहल नहि।

हिनका सन विद्वान्, सहृदय, सौजन्यमूर्ति, विनम्र, कर्मठ व्यक्तिक सारस्वत लाभ प्राप्त करब अपना लोकनिक सौभाग्य थिक। ई सौभाग्य बनल रहय। मैथिली आरो खिलखिला उठथि।

***. ***. ***

(17. 11. 2025)